मुलेठी

RSMPB JAIPUR

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com
Website : www.rsmpb.com

मुलेठी

1 वानस्पतिक नाम : Glycyrrhiza glabra

कुलः Fabaceae

2.सामान्य वर्णन : मूल काष्ठ मधुर होने के कारण संस्कृत में मधुयष्ठि एवं मधु सदृश्य माधुर्य होने के कारण मधुक भी कहते है। नपुसंकता का नाश करता है अतः कीतकः भी कहा गया है। अंग्रेजी में इसे लिकोराइस कहते है। मुलहठी का पौधा 1 मीटर से 2 मीटर तक का झाड़ी के रूप में होता है। इसकी पत्तियाँ संयुक्त व अण्डाकार जिन के अग्रभाग नुकीले होते है। पुष्प हल्के गुलाबी रंग के होते है। फलियाँ दबी हुई 2 से 2.5 से.मी. लम्बी चपटी होती है। बीज 2 से 4 वृक्काकार (गुर्दे जैसे) होते है। इसकी जड़े गोल लम्बी तथा लम्बवत झुर्रीदार होती है तथा वृत्ताकार चिन्ह होते है। इसकी जड़ों एवं भूमिगत तने से कई शाखाएँ निकलती है। यह एक बहुवर्षीय (2 से 3 वर्ष) की आयु की फसल का पौधा है। औषधीय उपयोग में इसकी केवल जड़े या भूमिगत तने ही उपयोग में लाए जाते है। मुलहठी में 50 प्रतिशत जल होता है। इसका मुख्य घटक 'ग्लीसराइजिन' है जो 5 से 20 प्रतिशत विभिन्न प्रजातियों में पाया जाता है। ग्लिसराइजिन मुलहठी के ऊपर वाले भाग में नहीं होता है।

इसमें 10 से 14 प्रतिशत तक ग्लाइकोसाइड भी होता है। इसमें 10 से 14 प्रतिशत तक ग्लाइकोसाइड भी होता है।इसके अलावा कुमेरिन, फ्रलेवोनोन, लिक्विरीटीन, आइसोलिक्वरीटीन, अम्बलीफीरोन आदि तत्व भी पाये जाते है। इसके अतिरिक्त अल्सर के घावों को शीघ्र भरने वाले विभिन्न घटक ग्लाइकोसाइड्स, लिक्विरीस्ट्रोसाइड्स, आइसोलिक्विरीस्ट्रोसाइड आदि तत्व भी मुलेठी में पाये जाते

3. भौगोलिक वितरणः यह अरब, ईरान, तुर्कीस्तान, अफगानिस्तान, ईराक, दक्षिणी रूस का मूल पौधा है। भारत में मुलेठी का आयात फारस की खाड़ी प्रधानतः स्पेन, ईराक, साइबेरिया आदि देशों से होता है। इस समय भारत में पंजाब, कश्मीर, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, इन्दौर (म. प्र.) व कनार्टक में इसकी खेती की जा रही है।

4. कृषि तकनीकः मुलहठी की खेती हल्की बालूदोमट मिट्टी, गहरी भूरी मिट्टी 1 मीटर तक उपयुक्त रहती है। भूमि का PH मान 6 से 8.2 तक उत्तम माना गया है। मुलहठी ही ऐसा पौधा है जिसकी उपज हम लवणीय भूमि में भी ले सकते है।प्रारम्भ में जब तक पौधे जड़ नहीं पकड़ते, पानी की आवश्यकता नमी बनाए रखने हेतु नियमित की जानी चाहिए। जड़ों का विकास होने के उपरान्त 5–6 माह, 5 से 7 दिन में सिंचाई की आवश्यकता रहती है। खेत की तैयारी करते समय 5 ट्रोली प्रति एकड़ गोबर खाद अथवा कम्पोस्ट जमीन में मिला देना चाहिए। दीमक के प्रकोप से बचाने के लिए 10 किलो बी.एच.सी. पाउडर जमीन में मिला देना चाहिए। चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार द्वारा विकसित की गई हरियाणा मुलहठी नं.1 की सिफारिश पूरे देश में खेती के लिए की गई है। मुलेठी लगाने का सबसे उत्तम समय फरवरी–मार्च का है जहाँ पानी की उत्तम व्यवस्था हो वहाँ इसी समय लगाना चाहिए, पानी की अच्छी व्यवस्था नहीं होने पर इसे जुलाई अगस्त में भी लगाया जा सकता है। इस समय इसका फुटान कम होता है। मुलहठी की बिजाई इसकी जड़ों से होती है। इसकी जड़ें 6 इंच से 9 इंच की प्राप्त कर उन्हें लाइन से लाइन की दूरी 3 फीट व पौधे की दूरी 1.5 फीट पर जड़ों का तीन चौथाई भाग जमीन में 1 से 2 इंच दबा दिया जाता है। जड़ों का रोपण करते ही हल्का पानी दे देना

चाहिए, जिससे जड़ों का जमाव अच्छा होता है। खेत में पानी ज्यादा समय तक नहीं भरा रहना चाहिए। मुलहठी की खेती में प्रथम वर्ष में 2 से 3 निराई गुडाई की आवश्यकता रहते है। सर्दियों में मुलहठी के पत्ते झड़ जाते है। फिर फरवरी माह में खेत की निराई–गुडाई कर खाद दें। मार्च में फिर पौधे हरे–भरे होने लग जाते है। कभी–कभी इसके पत्तों में रोग लग जाता है जिससे पत्तों पर धब्बे पड़कर पीले पड़ जाते है। इसके बचाव हेतु महीने में एक बार गोमूत्र व पानी 1:10 का मिलाकर स्प्रे करना चाहिए।

5. फसलोत्पादन तकनीक (Harvesting Technique) : फसल की कटाई : मुलहठी की फसल को उगाने के ढ़ाई वर्ष बाद डेढ़ से दो फीट तक खोद कर इसकी जड़ों को निकाल लते है। जड़े निकालने से पूर्व फसल को पानी दे देना चाहिए, जिससे जड़ों को निकालने में आसानी रहे। जड़ों को कसी, हल, एरो आदि से 2–3 बार खेत में चलाकर निकाला जा सकता है। सम्पूर्ण जड़े निकालने के उपरान्त भी खेत में कुछ जड़े रह जाती है जो फिर उग जाती है।जड़ों को सुखाना : जड़ों को खोदने के उपरान्त छाया में फर्श पर फैलाकर सुखाते है जिससे जड़ों की आर्द्रता 50 प्रतिशत से घटकर 10 प्रतिशत रह जाती है। मुलहठी की अच्छी फसल से लगभग 30–32 क्वि. सूखी जड़े प्राप्त हो जाती है।

6. औषधीय उपयोग: मुलेठी का उपयोग खाँसी,